मैं गवाह हूँ

(लघु कहानी संग्रह)

डॉ. प्रेम सिंह

मैं गवाह हूँ

डॉ. प्रेम सिंह

अनुक्रम

लंगड़ी नानी	8
ठहाका	10
किताबें दिला दो बस	12
अरविन्द	13
काँटा	14
व्यवहार	16
बेदखल	18
बच्चा	21
अजूबा	24
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी	26
बच्चे अनाथ नहीं होते	31
प्रतिवाद	33
ढोलक	35
बाधित बच्चा	38

इतना तो नहीं सह सकता 39

घर का इतिहास 41

प्रायश्चित 44

भाई के बच्चे 47

चिक्की 48

पाँचवी कन्या 51

चित्रकार 53

निन्नी 54

मास्टरजी 55

और वह मर गया 58

माँ का दूध 60

इच्छा विवाह की 61

सवाल 63

परिणय 65

अस्तित्व 67

पगली 68

घर क्यों छोड़ा? 70

मोमबत्ती और गेंद 72

मैय्यत पर 74

साथ-साथ 76

बलात्कार 78

मोना 80

चहक 81

पिता 84

लड़की 86

समझौता 88

लीसा रह न सकी 89

अपराध बोध 90

चलना तो होगा ही 92

अष्टावक्र गीता जी रहा है 94

कम से कम तुम तो न पूछते 96

ऐसा भी क्या जगना मम्मी 97

कभी तो... 102

नहीं-नहीं... 106

माँ का बबलू - स्वामी विजयानन्द 111

रक्षा कवच 116

स्मृतियाँ 122

महत्वाकांक्षाएँ 126

अपनी बात

जब अश्रुपूरित आँखें देख मेरी आँखें भी भीगने से न रह सकीं, जब प्रार्थना के लिए जुड़े हाथ देख मेरे हाथ भी जुड़ गये, जब विद्रोहियों ने मेरे मन में भी विद्रोह का अंकुर बो दिया, जब कुछ आत्मीयों ने प्रेम की वर्षा करके मेरे मन में भी ममत्व जगा दिया तब मैं चुप नहीं रह सकी और कुछ न कुछ कह ही दिया।

कुर्सी की बुनाई (ताना, बाना, ताना, कच्ची, चीर, छठी) की तरह कहानी का भी शिल्प होता है। निरंतर कहानी की खबर लेते रहने के कारण यह मुझे अच्छी तरह मालूम तो है पर जैसे दस्तकार एक दो बुनाइयाँ बुनकर कह देता है- काम पूरा हो गया। तार आकर्षक लगा देता है। कुर्सी कितनी मजबूत होगी इससे उसे कोई गहरा प्रयोजन नहीं होता। मुझे तो कहानी का तार भी पकड़ना नहीं आया, मैं बुनती कैसे? पर जब कुछ हाथ, हाथ मिलाने को आतुर दिखे, जब कुछ बेबस पाँव चलने के लिए व्याकुल पाए गये, जब कुछ सूनी आँखें उजाला देखने के लिए तड़पती पाई गयी और उनकी बात पहुँचाना आवश्यक हो गया तो मुझसे रहा नहीं गया और मैंने कुछ (भावचित्र) उकेर दिए।

कविता के साथ कोई शर्त नहीं होती। इसी तरह नदी के साथ भी कोई शर्त नहीं होती। उसे जिस किसी रास्ते से बहना पड़े, बहती ही है। कविता भी जिस-जिस रास्ते से गुजरती गयी, मैंने गुजरने दिया क्योंकि मामला पूरी तरह से अपना था। कोई सुने तो भी